फंड ऑफ फंड्स पर टिकी फंडों की नजर

अभिषेक कुमार
मुंबई, 5 फरवरी

विकल्प पर फंडों की नजर

- डेट विकल्प तैयार करने के लिए एफओएफ माध्यम पर ध्यान दे रहे हैं फंड
- कर लाभ के लिए फंड हाउस मौजूदा डेट एफओएफ में आर्बिट्राज को भी कर रहे शामिल
- विश्लेषकों की राय में एफओएफ योजनाएं डेट पर सकारात्मक नजरिया रखने वाले निवेशकों के लिए उपयुक्त

कर किफायती डेट विकल्प के लिए म्युचुअल फंड (एमएफ) उद्योग की तलाश फंड ऑफ फंड्स (एफओएफ) सेगमेंट तक पहुंच गई है। इस समय दो डेट-केंद्रित एफओएफ हैं जो बेहतर कर दक्षता प्रदान करने के लिए आर्बिट्राज फंड में कुछ हिस्सा निवेश करते हैं। ऐसी ही दो अन्य योजनाएं 3 मार्च तक पेश की जानी है।

सबसे पहले कोटक फंड ने अक्टूबर 2024 में अपने कोटक ऑल वेदर डेट एफओएफ के परिसंपत्ति आवंटन ढांचे में बदलाव लाकर नई पेशकश की थी। इस फंड का नाम बदलकर कोटक इनकम प्लस आर्बिट्राज फंड कर दिया गया है। हाल में, बंधन, ऐक्सिस और आदित्य बिड़ला सनलाइफ (एबीएसएल) फंड ने भी इस तरह की पेशकश की घोषणा की है।

कराधान में बदलाव के बाद म्युचुअल फंड उद्योग डेट फंडों की जगह कम जोखिम वाली कर अनुकूल पेशकशों के लिए संभावनाएं तलाश रहा है। डेट फंड कम जोखिम और रिटर्न के अनुमान की वजह से अल्पावधि के लिए निवेशों के पसंदीदा रहे हैं। लेकिन 2023 में उनका इंडेक्सेशन का लाभ छिन गया।

डेट फंड से प्राप्त लाभ पर अब निवेशक की आयकर स्लैब दर के अनुसार कर लगता है, चाहे उसकी होल्डिंग अवधि कुछ भी हो। हालांकि 2024 में फंड ऑफ फंड (एफओएफ) के कर ढांचे में बदलाव ने कर-अनुकूल डेट-केंद्रित एफओएफ के लिए अवसर पैदा किए हैं।

कोई भी एफओएफ (जो कम से कम 35 प्रतिशत इक्विटी में (इसमें इक्विटी आर्बिट्राज भी शामिल) निवेश करता है) वह दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ (एलटीसीजी) कर लाभ के लिए पात्र होगा यानी अगर निवेशक दो वर्ष से अधिक समय तक निवेशित रहता है तो लाभ पर 12.5 प्रतिशत कर लगेगा। सभी चार एफओएफ (जिन्होंने इक्विटी आर्बिट्राज को मिश्रण में शामिल किया है) लगभग 35-40 प्रतिशत आर्बिट्राज फंडों में और शेष डेट फंडों में आवंटन की योजना बना रहे हैं।

कोटक महिंद्रा एएमसी के सीआईओ (डेट) दीपक अग्रवाल ने कहा, 'कोटक इनकम प्लस आर्बिट्राज एफओएफ यह सुनिश्चित करता है कि डेट केंद्रित म्युचुअल फंड यूनिट, मनी मार्केट की योजनाएं, सरकारी प्रतिभूतियों या ट्रेजरी बिलों पर त्रिपक्षीय रीपो, नकदी और नकदी समतुल्य में निवेश हर समय 65 प्रतिशत से नीचे रहे। 24 महीने से अधिक की अवधि वाले निवेश पर लाभ अब एलटीसीजी के तौर पर माना जाएगा और इस पर 12.5 फीसदी की सपाट दर से कर लगेगा। यह बदलाव दीर्घावधि निवेशकों की कर दक्षता काफी हद तक बढ़ाता है, क्योंकि इससे उनकी कर देयता कम हो जाती है और फंड को पारंपरिक डेट-केंद्रित फंडों के लिए एक अलग और अधिक अनुकूल विकल्प के रूप में पहचान मिलती है।'

बंधन, ऐक्सिस और एबीएसएल म्युचुअल फंड ने अपने मौजूदा डेट एफओएफ की मुख्य विशेषताओं में बदलाव करते हुए इसी तरह की योजनाएं पेश की हैं। बंधन का ऑल सीजंस बॉन्ड फंड 28 जनवरी को बंधन इनकम प्लस आर्बिट्राज एफओएफ में तब्दील हो गया। ऐक्सिस ऑल सीजंस डेट एफओएफ 14 फरवरी को ऐक्सिस इनकम एडवांटेज बनने के लिए तैयार है। एबीएसएल ऐक्टिव डेट मल्टी मैनेजर एफओएफ 3 मार्च 2025 से एबीएसएल डेट प्लस आर्बिट्राज एफओएफ के नाम से जाना जाएगा।

एचडीएफसी म्युचुअल फंड ने सितंबर 2024 में इसी तरह के फंड 'एचडीएफसी डेट एडवांटेज एफओएफ' के लिए बाजार नियामक सेबी से मंजूरी मांगी थी। हालांकि इसे अभी शुरू किया जाना बाकी है।

विश्लेषकों का कहना है कि इस तरह की पेशकश डेट पर सकारात्मक नजरिया रखने वाले निवेशकों के लिए उपयुक्त है। हालांकि, उन्हें उन डेट फंडों की अंतर्निहित परिसंपत्तियों के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है जिनमें एफओएफ निवेश करते हैं। साथ ही, उनके एक्सपेंस रेशियो पर भी ध्यान देना जरूरी है क्योंकि यह काफी ज्यादा हो सकते हैं।

रुपी विद ऋषभ के संस्थापक ऋषभ देसाई ने कहा, 'कर लाभ के कारण ऐसी पेशकश को निवेशकों के पोर्टफोलियो में जगह मिल सकती है। हालांकि, बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि वे किस डेट फंड में निवेश करते हैं और उनका प्रबंधन कितना अच्छा है। इसके अलावा फंड का एक्सपेंस रेशियो भी जायज होना चाहिए ताकि वह कम जोखिम वाले अन्य निवेश विकल्पों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सके।' डेट फंड कराधान में बदलाव के बाद कम जोखिम वाले निवेश के लिए आर्बिट्राज फंड पसंदीदा विकल्प बन गए हैं।

एनएसई व बीएसई के बीच क्लियरिंग शुल्क का विवाद बरकरार

खुशबू तिवारी
मुंबई, 5 फरवरी

एनएसई क्लियरिंग ने बीएसई से बकाया 312 करोड़ रुपये प्राप्त न होने की सूचना दी

नैशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) और बीएसई अभी भी क्लियरिंग और सेटलमेंट शुल्कों को लेकर आपस में सहमति नहीं बना पाए हैं और यह विवाद एक साल से ज्यादा समय से चला आ रहा है। एनएसई ने अपने ताजा वित्तीय विवरण में कहा है कि उसकी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक एनएसई क्लियरिंग (एनसीएल) के पास बाजार नियामक सेबी के नियमों के तहत जरूरी न्यूनतम लिक्विड परिसंपत्तियों में 177 करोड़ रुपये की कमी है।

एनसीएल ने कहा कि यह कमी मुख्य रूप से प्रतिस्पर्धी बीएसई के पास 312 करोड़ रुपये के लंबित बकाया की वजह से है। कंपनी ने कहा कि इस कमी को 31 मार्च, 2025 से पहले आंतरिक संग्रह/रिकवरी से पूरा जाएगा।

पिछले साल बीएसई ने कहा था कि ऊंचा क्लियरिंग और सेटलमेंट शुल्क उन वजहों में से एक है जो उसके शुद्ध लाभ पर प्रभाव डाल रहे हैं। एक्सचेंज ने एनएसई से राहत मांगी थी और इंटरऑपरेबिलिटी एग्रीमेंट के तहत शुल्कों की समीक्षा की मांग की थी। हालांकि एनएसई ने बाद में स्पष्ट किया कि समझौते के पुनर्गठन की उसकी कोई योजना नहीं है और वह करार के तहत तय कीमत जारी रखेगा।

सूत्रों ने संकेत दिया कि बाजार नियामक की सेकेंडरी मार्केट एडवाइजरी कमेटी में मामले पर चर्चा हुई है। एक अन्य सूत्र ने कहा कि बीएसई गुरुवार को होने वाली अपनी बोर्ड बैठक में इस पर चर्चा करेगा। एक सूत्र ने कहा कि एक्सचेंज एक बयान जारी करेगा जिससे संकेत मिलता है कि बीएसई पर एनसीएल के कुछ बकाया हो सकते हैं। वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही के वित्तीय नतीजों में बीएसई ने क्लियरिंग और सेटलमेंट खर्च के तौर पर 101 करोड़ रुपये दर्ज किए थे। इस बारे में जानकारी के लिए बीएसई को भेजे गए ईमेल का जवाब नहीं मिला।

जोमैटो और जियो फाइनै. को निफ्टी में मिलेगी जगह

जोमैटो और जियो फाइनैंशियल सर्विसेज को बेंचमार्क निफ्टी-50 में मार्च में होने वाले आगामी बदलाव में जगह मिल सकती है। यह मानना है नुवामा ऑल्टनेटिव ऐंड क्वांटिटेटिव रिसर्च का। एक रिपोर्ट में रिसर्च फर्म ने कहा कि हमें भरोसा है कि ये दोनों शेयर इंडेक्स में तेल विपणन कंपनी बीपीसीएल और एफएमसीजी दिग्गज ब्रिटानिया की जगह ले सकते हैं।

नुवामा ने कहा कि इस बदलाव से जोमैटो और जियो फाइनैंशियल में काफी निवेश आ सकता है। अनुमान है कि यह निवेश क्रमशः 63.1 करोड़ डॉलर और 32 करोड़ डॉलर होगा। उधर, बीपीसीएल और ब्रिटानिया के निकलने से उनमें क्रमशः 20.1 करोड़ डॉलर और 24 करोड़ डॉलर की बिकवाली हो सकती है। कहा गया है कि दोपहिया वाहन की दिग्गज हीरो मोटोकॉर्प 50-शेयर सूचकांक में मामूली बढ़त के साथ स्थिति बनाए रखने में सफल हो सकती है।

इससे पहले जेएम फाइनैंशियल ने भी जोमैटो और जियो फाइनैंशियल के बेंचमार्क में शामिल होने का अनुमान लगाया था। ब्रोकरेज हाउस इनके शामिल होने के बाद इनमें क्रमशः 65 करोड़ डॉलर और 35.6 करोड़ डॉलर का निवेश आने की उम्मीद कर रहा है। *बीएस*

दो-तिहाई सेक्टोरल सूचकांक 10 वर्षीय औसत के मुकाबले ऊपर

घरेलू ब्रोकरेज कंपनी मोतीलाल ओसवाल की एक रिपोर्ट के अनुसार बेंचमार्क सूचकांकों में अपने ऊंचे स्तर से 10 प्रतिशत से अधिक की गिरावट के बावजूद, दो-तिहाई क्षेत्रीय सूचकांक अभी भी अपने 10-वर्षीय औसत पी/ई मल्टीपल से ऊपर कारोबार कर रहे हैं। सर्वाधिक प्रीमियम पर कारोबार कर रहे क्षेत्रों में इन्फ्रास्ट्रक्चर , यूटिलिटीज और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स शामिल हैं। इसके विपरीत, मीडिया, बैंक और वाहन कंपनियां अपने ऐतिहासिक औसत के मुकाबले गिरावट पर कारोबार कर रही हैं।

प्रमुख क्षेत्रों में, आईटी ऊपर कारोबार कर रहा है, जबकि बैंक डिस्काउंट के साथ उपलब्ध हैं। कंज्यूमर शेयर काफी हद तक अपने दीर्घावधि औसत के अनुरूप कारोबार कर रहे हैं।

आईटी क्षेत्र 27.6 गुना के पीई अनुपात के साथ 31 प्रतिशत प्रीमियम पर कारोबार कर रहा है। यह तेजी तीसरी तिमाही के नतीजों के बाद कई सॉफ्टवेयर निर्यातकों से अनुमान अपग्रेड किए जाने की वजह से आई है। मोतीलाल ओसवाल का कहना है, 'कुछ क्षेत्रों में कमेंट्री सकारात्मक हो गई हैं और हमारा मानना है कि तकनीकी खर्च में सुधार (मुख्य रूप से पिछले छह महीनों में बीएफएसआई द्वारा संचालित) अब हाई-टेक और खुदरा जैसे अन्य क्षेत्रों में बढ़ रहा है।'

निजी बैंक मौजूदा समय में अपने 2.5 गुना के ऐतिहासिक औसत के 2.2 गुना के प्राइस-टु-बुक (पी/बी) अनुपात पर कारोबार कर रहे हैं जिससे गिरावट का संकेत मिलता है। ब्रोकरेज ने कहा है, 'ऋण वृद्धि 11.5 फीसदी पर है, जो 18 फीसदी के ऊंचे स्तर से कम है, क्योंकि जमा बाजार आकर्षक बना हुआ है। इसके अलावा, ऊंचा ऋण-जमा अनुपात ऋण वृद्धि को प्रभावित कर रहा है, जबकि असुरक्षित ऋणों में दबाव बना हुआ है। जमा वृद्धि स्थिर रही, जबकि सावधि जमा में तेजी के बीच सीएएसए अनुपात में नकारात्मक रुझान देखने को मिल सकता है।'

कंज्यूमर सेक्टर के पीई और पीबी अनुपात मौजूदा समय में 42.9 गुना और 10.4 गुना पर हैं, जो अपने 10 वर्षीय औसत के अनुरूप हैं। हालांकि इस क्षेत्र को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिनमें मांग सुधार में लगातार दबाव भी शामिल है। ऊंची खाद्य मुद्रास्फीति और पाम ऑयल की बढ़ती कीमतों के कारण मार्जिन पर भी दबाव है। इस दबावों को कम करने के लिए, कंपनियां कीमतों में बढ़ोतरी पर जोर दे रही हैं। - **सुंदर सेतुरामन**

दीर्घावधि औसत से सबसे अधिक प्रीमियम और डिस्काउंट वाले क्षेत्र

पीई मल्टीपल

प्रीमियम	मौजूदा	10 वर्षीय औसत	अंतर %
इन्फ्रास्ट्रक्चर	21.7	11.9	82.5
यूटिलिटीज	16.3	11.6	40.7
कंज्यूमर ड्यूरेबल्स	48.0	34.3	40.1
सीमेंट	38.4	28.5	34.7
केमिकल	32.8	24.8	32.2
डिस्काउंट	**मौजूदा**	**10 वर्षीय औसत**	**अंतर %**
मीडिया	15.4	25.2	-38.9
पीएसयू बैंक	6.8	10.1	-32.0
निजी बैंक	16.1	21.1	-23.8
ऑटो	23.0	27.8	-17.3
खुदरा	80.6	84.2	-4.3

स्रोत: मोतीलाल ओसवाल रिपोर्ट

उतारचढ़ाव भरे कारोबार में टूटे बीएसई सेंसेक्स और निफ्टी

हाल की तेजी के बाद शेयर बाजार में दोनों बेंचमार्क सेंसेक्स और निफ्टी बुधवार को टूट गए। उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 313 अंक टूटा। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की इस सप्ताह पेश होने वाली मौद्रिक नीति समीक्षा और व्यापार युद्ध को लेकर चिंता के बीच निवेशकों ने सतर्क रुख अपनाया। बीएसई सेंसेक्स 312.53 अंक यानी 0.40 फीसदी की गिरावट के साथ 78,271.28 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 367.56 अंक तक नीचे चला गया था। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 21 नुकसान में जबकि नौ लाभ में रहे।

उधर, नैशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 42.95 अंक यानी 0.18 फीसदी की गिरावट के साथ 23,696.30 अंक पर बंद हुआ। मंगलवार की तेजी के बाद मुनाफावसूली और रुपये के अबतक के सबसे निचले स्तर पर आने से भी धारणा प्रभावित हुई। सेंसेक्स मंगलवार को 1,397.07 अंक चढ़ा था और निफ्टी 378.20 अंक चढ़कर एक महीने के उच्चस्तर पर बंद हुआ था।

सेंसेक्स के 30 शेयरों में से एशियन पेंट्स 3 फीसदी से अधिक नीचे आया। कंपनी का एकीकृत शुद्ध लाभ दिसंबर, 2024 को समाप्त तीसरी तिमाही में 23.5 की गिरावट के साथ 1,128.43 करोड़ रुपये रहने की सूचना से कंपनी का शेयर नीचे आया। मुख्य रूप से कमजोर मांग से कंपनी का लाभ कम हुआ है। इसके अलावा टाइटन, नेस्ले, हिंदुस्तान यूनिलीवर, भारतीय स्टेट बैंक, लार्सन ऐंड टुब्रो, आईटीसी, जोमैटो और बजाज फिनसर्व के शेयर प्रमुख रूप से नुकसान में रहे।

दूसरी तरफ, लाभ में रहने वाले शेयरों में अदाणी पोर्ट्स, इंडसइंड बैंक, टाटा मोटर्स और एचडीएफसी बैंक शामिल हैं। मेहता इक्विटीज लि. के वरिष्ठ उपाध्यक्ष (शोध) प्रशांत तापसे ने कहा, वैश्विक स्तर पर गिरावट के बीच चुनिंदा बैंकों, वाहन, रियल्टी और दैनिक उपयोग का सामान बनाने वाली कंपनियों के शेयरों में बिकवाली से बाजार नुकसान में रहा। सभी की नजरें शुक्रवार को मौद्रिक नीति घोषणा पर होगी। अगले कुछ सत्रों में कारोबार के दौरान उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। *भाषा*

बिजनेस अपडेट के बाद 6 फीसदी उछला ऐंजल वन

कारोबार को लेकर उत्साहजनक जानकारी के बाद ऐंजल वन का शेयर बुधवार को 6.3 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 2,497 रुपये पर पहुंच गया। व्यापक बाजार में बिकवाली के बावजूद ब्रोकरेज फर्म ने अपने क्लाइंट आधार (बढ़कर 3 करोड़ के पार चला गया) और ऑर्डर वॉल्यूम में बढ़ोतरी दर्ज की। वायदा और विकल्प में कंपनी के रोज के औसत कारोबार में मासिक आधार पर 6 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज हुई। हालांकि नकदी बाजार में रोजाना का औसत कारोबार 13 फीसदी घट गया। नकदी बाजार में ऐंजल वन की बाजार हिस्सेदारी 16.6 फीसदी पर मजबूत बनी हुई है। इससे पहले नियामकीय सख्ती की चिंता से कंपनी का शेयर अपने उच्चस्तर से 40 फीसदी से ज्यादा टूट गया था। *बीएस*

अजेक्स इंजीनियरिंग का आईपीओ सोमवार को खुलेगा

निर्माण उपकरण निर्माता अजेक्स इंजीनियरिंग का 1,269 करोड़ रुपये का आईपीओ सोमवार को खुलेगा। आईपीओ का कीमत दायरा 599 से 629 रुपये प्रति शेयर तय किया गया है। कीमत दायरे के ऊपरी स्तर पर कंपनी का मूल्यांकन करीब 7,200 करोड़ रुपये बैठता है। यह आईपीओ पूरी तरह से प्रवर्तकों और प्राइवेट इक्विटी दिग्गज केदारा कैपिटल की तरफ से हो रही शेयर बिक्री है। यह कंपनी देशकी सबसे बड़ी सेल्फ-लोडिंग कंक्रीट मिक्सरों की मैन्युफैक्चरर है जिसका शुद्ध लाभ 2023-24 में 225 करोड़ रुपये रहा। *बीएस*

NSE

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालय: "एक्सचेंज प्लाजा", सी–१, ब्लॉक जी, बांद्रा–कुर्ला कॉम्प्लेक्स,बांद्रा (पूर्व), मुंबई – ४०० ०५१, महाराष्ट्र, भारत

सार्वजनिक सूचना

सेबी (इक्विटी शेयरों की असूचीबद्धता) विनियम, २०२१ के विनियम ३२(३) के अनुसार कंपनियों के इक्विटी शेयरों की अनिवार्य असूचीबद्धता के लिए सार्वजनिक सूचना.

सेबी (इक्विटी शेयरों की असूचीबद्धता) विनियम, २०२१ ('असूचीबद्धता विनियम') के विनियम ३२(३) के अनुसार और प्रतिभूति अनुबंध (विनियम) अधिनियम, १९५६ की धारा २१(ए) के तहत बनाए गए नियमों और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड ("एक्सचेंज") के नियमों, उपनियमों और विनियमों के अनुसार, एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि एक्सचेंज निम्नलिखित कम्पनियों को असूचीबद्ध करने का प्रस्ताव करता है, क्योंकि उक्त कम्पनियों ने, अन्य बातों के साथ–साथ, अपनी प्रतिभूतियों को असूचीबद्ध करने के लिए आधार बना लिए हैं अर्थात्, उक्त कंपनियों की प्रतिभूतियों में ट्रेडिंग सेबी (सूचीबद्ध दायित्व और प्रकटीकरण आवश्यकताएं) विनियम, २०१५ के विभिन्न प्रावधानों और इस संबंध में सेबी/एक्सचेंज द्वारा जारी विभिन्न परिपत्रों का अनुपालन न करने के कारण छह महीने से अधिक समय से निलंबित है।

एक्सचेंज ने एक्सचेंज के रिकॉर्ड के अनुसार कंपनी के अंतिम ज्ञात पते और पंजीकृत ईमेल पते और कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय (एमसीए) के रिकॉर्ड के अनुसार पंजीकृत कार्यालय पते पर **कारण बताओ नोटिस** जारी किया है, जिसमें उक्त कंपनियों से कारण बताओ नोटिस जारी करके पूछा गया है कि कंपनी के इक्विटी शेयरों को एक्सचेंज से अनिवार्य रूप से असूचीबद्ध क्यों न कर दिया जाए। हालांकि, कम्पनियों को उनके पंजीकृत पते पर जारी कारण बताओ नोटिस डिलीवर हुए बिना वापस आ गए हैं। एक्सचेंज के रिकॉर्ड के अनुसार कंपनियों के नाम और उनका अंतिम ज्ञात पता नीचे दिया गया है:

क्रमांक	कंपनी	कंपनी का पंजीकृत पता
१.	विशेष इन्फोटेक्निक्स लिमिटेड	*७०३, अरुणाचल बिल्डिंग, १९, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली –११०००१।

**पते एक्सचेंज के रिकॉर्ड के अनुसार उपलब्ध हैं।*

टिप्पणियां:
एमसीए के रिकॉर्ड के अनुसार १२ फरवरी २०१६ से कंपनी का नाम बदलकर एमपीएस इन्फोटेक्निक्स लिमिटेड कर दिया गया है।

अनिवार्य असूचीबद्धता के परिणाम निम्नलिखित हैं:

- उपरोक्त कंपनियों का स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध होना बंद हो जाएगा। इन कंपनियों को स्टॉक एक्सचेंज के प्रसार बोर्ड में डाल दिया जाएगा।
- असूचीबद्धता विनियमों के विनियम ३४ के अनुसार,

१. असूचीबद्ध कंपनी, इसके पूर्णकालिक निदेशक, प्रतिभूति कानूनों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार व्यक्ति, इसके प्रवर्तक, और इनमें से किसी के द्वारा प्रवर्तित की गई कंपनियां प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिभूति बाजार तक पहुंच नहीं बनाएंगी या किसी इक्विटी शेयर को सूचीबद्ध करने की मांग नहीं करेंगी या ऐसी असूचीबद्धता की तारीख से दस वर्ष की अवधि के लिए प्रतिभूति बाजार में मध्यस्थ के रूप में कार्य नहीं करेंगी।

२. किसी कंपनी के मामले में जिसका उचित मूल्य धनात्मक है–

ए. ऐसी कंपनी और डिपॉजिटरी प्रवर्तक/प्रवर्तकों के समूह द्वारा रखे गए किसी भी इक्विटी शेयर और लाभांश, अधिकार, बोनस शेयर, विभाजन आदि जैसे कॉर्पोरेट लाभों का बिक्री, गिरवी आदि के माध्यम से हस्तांतरण नहीं करेंगे, प्रवर्तकों/प्रवर्तक समूह द्वारा रखे गए सभी इक्विटी शेयरों पर तब तक रोक रहेगी, जब तक कि ऐसी कंपनी के प्रवर्तक इन विनियमों के विनियम ३३ के उप–विनियम (४) के अनुपालन में सार्वजनिक शेयरधारकों को बाहर निकलने का विकल्प प्रदान नहीं करते हैं, जैसा कि संबंधित मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज द्वारा प्रमाणित किया गया है;

बी. अनिवार्य रूप से असूचीबद्ध की गई कंपनी के प्रवर्तक, पूर्णकालिक निदेशक और प्रतिभूति कानूनों के अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार व्यक्ति भी तब तक किसी सूचीबद्ध कंपनी के निदेशक बनने के लिए पात्र नहीं होंगे, जब तक कि खंड (ए) में उल्लिखित के अनुसार बाहर निकलने का विकल्प प्रदान नहीं किया जाता है।

- असूचीबद्धता विनियमों के विनियम ३३ के अनुसार,

१. जहां किसी कंपनी के इक्विटी शेयरों को किसी मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज द्वारा असूचीबद्ध किया जाता है, वहां मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज एक स्वतंत्र मूल्यांकनकर्ता (मूल्यांकनकर्ताओं) की नियुक्ति करेगा जो असूचीबद्ध किए गए इक्विटी शेयरों का उचित मूल्य निर्धारित करेंगे।

२. मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज विशेषज्ञ मूल्यांकनकर्ताओं का एक पैनल गठित करेगा और उक्त पैनल में से उप–विनियम (१) के प्रयोजनों के लिए मूल्यांकनकर्ता नियुक्त किए जाएंगे।

३. असूचीबद्ध किए गए इक्विटी शेयरों का मूल्य सेबी (इक्विटी शेयरों की असूचीबद्धता) विनियम, २०२१ के विनियम २० के उप–विनियम (२) में उल्लिखित कारकों को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकनकर्ता द्वारा निर्धारित किया जाएगा।

४. कंपनी के प्रवर्तक, मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज से असूचीबद्धता की तारीख से तीन महीने के अंदर, मूल्यांकनकर्ता द्वारा निर्धारित मूल्य का भुगतान करके सार्वजनिक शेयरधारकों से असूचीबद्ध इक्विटी शेयरों का अधिग्रहण करेंगे, बशर्ते कि सार्वजनिक शेयरधारकों के पास अपने शेयर रखने का विकल्प हो।

५. यदि विनियम ३३ के उप–विनियम (३) के अनुसार देय मूल्य का भुगतान विनियम ३३ के उप–विनियम (४) के अंतर्गत निर्दिष्ट समय के अंदर सभी शेयरधारकों को नहीं किया जाता है, तो प्रवर्तक उन सभी शेयरधारकों को दस प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होगा, जो अनिवार्य असूचीबद्धता ऑफर के अंतर्गत अपने शेयर पेश करते हैं।

कोई भी व्यक्ति जो प्रस्तावित असूचीबद्धता से असंतुष्ट हो, **वह इस सूचना के १५ कार्य दिवसों के अंदर यानी २७ फरवरी, २०२५ को या उससे पहले** एक्सचेंज की असूचीबद्धता समिति के समक्ष लिखित रूप में अपना अभ्यावेदन (यदि कोई हो) दे सकता है।

अभ्यावेदन देने वाले व्यक्ति(व्यक्तियों) के पूर्ण संपर्क विवरण (ईमेल आईडी, पता और फोन नंबर) के साथ अभ्यावेदन निम्नलिखित पते पर भेजा जाना चाहिए:

असूचीबद्धता समिति, सूचीबद्धता विभाग, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड, एक्सचेंज प्लाजा, सी–१, ब्लॉक–जी, बांद्रा–कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व), मुंबई ४०० ०५१ । संपर्क नंबर: +९१ २२ २६५९८१०० (३२०१४), ई–मेल: vgandhi@nse.co.in, delisting@nse.co.in के साथ प्रतिलिपि dl-insp-enf-delisting@nse.co.in. पर. अभ्यावेदन अनिवार्य रूप से उपरोक्त निर्दिष्ट ईमेल पते पर ईमेल किया जाना चाहिए। किसी भी गुमनाम अभ्यावेदन को वैध नहीं माना जाएगा।

कंपनियों को निर्देश दिया जाता है कि वे **२७ फरवरी, २०२५ तक या उससे पहले** उपरोक्त कंपनियों के प्रवर्तक/निदेशक के विवरण अपडेट करें। उपरोक्त सूचीबद्ध कंपनियों के प्रवर्तक/निदेशक से भी अनुरोध किया जाता है कि वे उपरोक्त टेलीफोन नम्बरों और ईमेल पते पर तत्काल एक्सचेंज से संपर्क करें।

स्थान: मुंबई
दिनांक: ०६ फरवरी, २०२५

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया लिमिटेड के लिए और उसकी ओर से

Nifty50

एशियन पेंट्स: मांग पर दबाव और प्रतिस्पर्धा की चिंता

तन्मय तिवारी
नई दिल्ली, 5 फरवरी

पेंट निर्माता पर संकट

- एशियन पेंट्स के शेयर में बुधवार को दिन के कारोबार में आई 5 फीसदी की गिरावट
- तिमाही के दौरान खासकर शहरी इलाकों में पेंट उद्योग पर सुस्त मांग का दबाव बना रहा
- तीसरी तिमाही में एशियन पेंट्स का संयुक्त शुद्ध लाभ सालाना आधार पर 23.3 फीसदी घटकर 1,110.5 करोड़ रुपये रहा
- कंपनी के राजस्व पर भी दबाव पड़ा और यह एक साल पहले के मुकाबले 6.1 फीसदी घटकर 8,549.4 करोड़ रुपये रह गया

देश की सबसे बड़ी पेंट निर्माता एशियन पेंट्स ने वित्त वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में कमजोर नतीजे पेश किए। कंपनी का प्रदर्शन अनुमान के मुकाबले खराब रहा क्योंकि शहरी क्षेत्रों में मांग पर दबाव से उसके प्रदर्शन पर असर पड़ा।

एशियन पेंट्स का शेयर बुधवार को दिन के कारोबार में 5.10 फीसदी गिरकर 2,235 रुपये के निचले स्तर पर आ गया और आखिर में 3.38 फीसदी की गिरावट के साथ 2,275.65 रुपये पर बंद हुआ। इसकी तुलना में सेंसेक्स 0.40 फीसदी गिरकर 78.271.28 पर बंद हुआ। एशियन पेंट्स सेंसेक्स और निफ्टी पर सबसे ज्यादा गिरने वाले शेयरों में शामिल रहा।

तीसरी तिमाही में एशियन पेंट्स का संयुक्त शुद्ध लाभ सालाना आधार पर 23.3 फीसदी घटकर 1,110.5 करोड़ रुपये रहा जो वित्त वर्ष 2024 की तीसरी तिमाही के 1,447.7 करोड़ रुपये से कम है।

कंपनी के राजस्व पर भी दबाव पड़ा और यह एक साल पहले के मुकाबले 6.1 फीसदी घटकर 8,549.4 करोड़ रुपये रह गया। पिछले साल की इसी तिमाही में यह आंकड़ा 9,103.1 करोड़ रुपये था। परिचालन मुनाफा (एबिटा) सालाना आधार पर 20.4 फीसदी गिरकर 1,636.7 करोड़ रुपये रहा जबकि वित्त वर्ष 2024 की तीसरी तिमाही में यह 2,056.1 करोड़ रुपये था। नतीजतन, सालाना आधार पर मार्जिन 22.6 फीसदी से 350 आधार अंक घटकर 19.1 फीसदी रह गया।

एशियन पेंट्स के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्याधिकारी अमित सिंगले ने कहा, 'तिमाही के दौरान खासकर शहरी इलाकों में पेंट उद्योग पर सुस्त मांग की वजह से दबाव बना रहा। हमने भारत में औद्योगिक समेत कुल कोटिंग्स कारोबार में 6.6 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की है। घरेलू डेकोरेटिव कारोबार ने 1.6 प्रतिशत की बिक्री वृद्धि दर्ज की। लेकिन त्योहारी सीजन की कमजोर मांग के कारण स्टैंडअलोन राजस्व में 7.5 प्रतिशत की गिरावट आई।'

हालांकि, सब कुछ निराशाजनक नहीं रहा। कंपनी के औद्योगिक कारोबार ने मजबूती दिखाई। इसमें सामान्य औद्योगिक और रीफिनिश सेगमेंट के मजबूत प्रदर्शन से 3.8 प्रतिशत की सालाना राजस्व वृद्धि दर्ज की गई। इसके अलावा एशियन पेंट्स ने अपने होम डेकोर व्यवसाय में लगातार इजाफा दर्ज किया और साथ ही अपने अंतरराष्ट्रीय पोर्टफोलियो में 5 फीसदी की वृद्धि दर्ज की जो स्थिर मुद्रा (सीसी) में 17.1 फीसदी बढ़ गया।

सुस्त वित्तीय नतीजों की वजह से विश्लेषकों ने कंपनी के अल्पावधि दृष्टिकोण पर चिंताएं जताई हैं।

आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज के विश्लेषकों ने अनुमान जताया है कि एशियन पेंट्स को वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही के अनुकूल आधार के बावजूद कैलेंडर वर्ष 2025 में कमजोर वृद्धि का सामना करना पड़ेगा। उन्हें लगता है कि शहरी बाजारों में दबाव बना हुआ है जिससे मुनाफा प्रभावित हो रहा है। इसके अलावा, वित्त वर्ष 2026 की पहली छमाही तक प्रतिस्पर्धा के और भी चुनौतीपूर्ण होने की उम्मीद है क्योंकि ग्रासिम अपने संयंत्रों और वितरण नेटवर्क का विस्तार कर रही है, जिससे एशियन पेंट्स पर मार्जिन के बजाय बाजार हिस्सेदारी को प्राथमिकता देने का दबाव बढ़ रहा है।

आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए आय अनुमान में 3 प्रतिशत की कटौती की है और 'रिड्यूस' रेटिंग बरकरार रखी है। ब्रोकरेज ने कीमत लक्ष्य को भी बदलकर कर 2,200 रुपये कर दिया है।

नुवामा रिसर्च ने भी इस शेयर के लिए अपना कीमत लक्ष्य 3,185 रुपये से घटाकर 3,000 रुपये कर दिया लेकिन 'खरीदें' रेटिंग बरकरार रखी है।

इनक्रेड इक्विटीज ने 2,340 रुपये का कीमत लक्ष्य तय किया है और कमजोर बिक्री को ध्यान में रखते हुए 'रिड्यूस' रेटिंग बरकरार रखी है। वैश्विक ब्रोकरों में गोल्डमैन सैक्स ने सुस्त मांग और बाजार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखते हुए 'बिकवाली' रेटिंग दी है और कीमत लक्ष्य घटाकर 2,275 रुपये कर दिया है। मॉर्गन स्टैनली ने 'अंडरवेट' रेटिंग बनाए रखी है।